IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 12, December 2025
Impact Factor: 5.731

शेखावाटी के शहरी एवं ग्रामीण युवाओं में जाति और राजनीतिक नेतृत्व की तुलनात्मक समीक्षा

राम चंद्र फरदोलिया[1] डॉ. सुशीला बेदी दुबे[2]

[1]शोधार्थी [2]शोध निर्देशक

राजनीति विज्ञान - विभाग

श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी,

झुन्झुनूं–राजस्थान

सारांश

यह शोध-पत्र राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण युवाओं के बीच जाति और राजनीतिक नेतृत्व के संबंध का गहन तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय लोकतंत्र में जाति एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक कारक रही है, जो नेतृत्व चयन, मतदान व्यवहार तथा राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि बदलते सामाजिक-आर्थिक परिवेश में युवा वर्ग जाति और राजनीतिक नेतृत्व को किस प्रकार देखता है।

मुख्य संकेतक: - शहरी-ग्रामीण अंतर, मतदान व्यवहार, सामाजिक परिवर्तन।

परिचय

भारत में जाति व्यवस्था केवल सामाजिक संरचना नहीं बल्कि राजनीतिक व्यवहार का भी महत्वपूर्ण निर्धारक रही है। विशेष रूप से राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र, जो ऐतिहासिक रूप से सामाजिक विविधता और जातिगत आंदोलनों से प्रभावित रहा है, वहां जाति और राजनीति का गहरा संबंध देखने को मिलता है।

युवा वर्ग, जो किसी भी समाज में परिवर्तन का वाहक होता है, राजनीतिक अवधारणाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शहरी और ग्रामीण युवाओं के बीच सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर उनके राजनीतिक दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।

(श्रीनिवास, 1962) के अनुसार, आधुनिकीकरण और शहरीकरण के प्रभाव से पारंपरिक आंदोलनों में परिवर्तन होता है, जबकि (कोठारी, 1970) ने भारतीय राजनीति में जाति को एक संगठक तत्व के रूप में देखा है।

Copyright to IJETIR

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 12, December 2025
Impact Factor: 5.731

जाति संरचना और युवाओं का राजनीतिक दृष्टिकोण

भारतीय समाज में जाति संरचना एक ऐतिहासिक और गहराई से निहित सामाजिक तंत्र है, जो न केवल सामाजिक दृष्टिकोण को बल्कि राजनीतिक दृष्टिकोण और व्यवहार को भी गहराई से प्रभावित करती है। विशेष रूप से युवाओं के संदर्भ में, जाति एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है, जो उनकी राजनीतिक सोच, नेतृत्व चयन और मतदान व्यवहार को प्रभावित करती है। परंपरागत रूप से देखा जाए तो जाति केवल एक सामाजिक पहचान नहीं रह गई है, बल्कि यह शक्ति, सुविधा और अवसरों के वितरण का भी आधार रह रही है (श्रीनिवास, 1962)। इसी कारण से युवा वर्ग, कबाड़ वह ग्रामीण क्षेत्र से हो या शहर, जातिगत संरचना से पूर्णतः अलग नहीं हो पाया है।

ग्रामीण क्षेत्रीय संरचना में अधिक विस्तृत और स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली जगहें हैं, जहां सामाजिक जीवन का सबसे बड़ा हिस्सा जाति के आधार पर होता है। यहां युवा बार-बार अपने परिवार और समुदाय की जाति, पहचान के आधार पर राजनीतिक निर्णय लेते हैं। यह देखा गया है कि ग्रामीण युवाओं में मतदान व्यवहार जाति आधारित होता है, जहां वे उसी उम्मीदवार या पार्टी का समर्थन करते हैं जो उनकी जाति का प्रतिनिधित्व करता है या उनके हितों की रक्षा करने का वादा करता है (यादव, 1999)। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्र में शिक्षा, रोजगार और विभिन्न सामाजिक संपर्कों के कारण जातिगत पहचान का प्रभाव कुछ हद तक कम हो रहा है, लेकिन यह पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है।

युवाओं राजनीतिक दृष्टिकोण आज केवल जाति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शिक्षा, मीडिया और वैश्वीकरण जैसे छात्रों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं को अधिक संपत्ति और संपत्ति-आधारित राजनीति की ओर उन्मुख किया जाता है, जहां वे विकास, रोजगार, और नीतिगत निर्णयों को प्राथमिकता देते हैं (बेटेइल, 1991)। इसके बावजूद, राजनीति में जाति का प्रभाव अभी भी देखा जा सकता है, क्योंकि राजनीतिक दल अक्सर जातिगत गुणांक पर ध्यान देते हुए का चयन करते हैं (कोठारी, 1970)।

इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया और डिजिटल विचारधारा ने युवाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण को व्यापक बना दिया है। अब युवा केवल स्थानीय जातिगत सांख्यिकी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक स्थिरता पर भी अपनी राय बना रहे हैं। हालाँकि, कई बार सोशल मीडिया पर भी जातिगत पहचान को राजनीतिक रूप से जोड़ने के लिए उपयोग किया जाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक तकनीक ने जाति के प्रभाव को समाप्त करने के लिए एक नया मंच प्रदान किया है (जैफ़रलॉट, 2003)।

समग्र रूप से देखा जाए तो जातीय संरचना और युवाओं का राजनीतिक दृष्टिकोण एक जटिल और गतिशील संबंध प्रस्तुत करता है। जहां एक ओर पारंपरिक समाज में जाति का प्रभाव अधिक स्पष्ट और अप्रत्यक्ष है, वहीं

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 12, December 2025
Impact Factor: 5.731

आधुनिक और शहरी परिवेश में यह प्रभाव सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता है। शिक्षा, सामाजिक जागरूकता और समान अवसरों के विस्तार के माध्यम से युवाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण में अधिक समावेशिता और भविष्य का निर्धारण हो सकता है, जिससे जाति विभाजन को कम किया जा सके (देसाई, 2004)।

शहरी एवं ग्रामीण युवाओं में राजनीतिक नेतृत्व की धारणा

शहरी एवं ग्रामीण युवाओं में राजनीतिक नेतृत्व की धारणा सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक आयामों से गहराई से प्रभावित होती है। भारतीय समाज में युवाओं को परिवर्तन का वाहक माना जाता है, परंतु उनकी राजनीतिक सोच उनके परिवेश के अनुसार भिन्न होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक नेतृत्व के प्रति युवाओं की धारणा पारंपरिक मूल्यों, जातिगत संरचना तथा स्थानीय सामाजिक संबंधों से अधिक प्रभावित होती है। यहां नेतृत्व का चयन प्रायः जाति, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा सामुदायिक पहचान के आधार पर किया जाता है। (कोठारी, 1970) के अनुसार, भारतीय राजनीति में जाति एक संगठक तत्व के रूप में कार्य करती है, स्वैच्छिक ग्रामीण क्षेत्रों में जहां सामाजिक संबंध अधिक प्रबल और स्थिर होते हैं। इसी प्रकार (यादव, 1999) ने यह स्पष्ट किया कि ग्रामीण युवाओं का मतदान व्यवहार अक्सर जाति आधारित होता है, जिससे राजनीतिक नेतृत्व की धारणा भी उसी दिशा में विकसित होती है।

इसके विपरीत, शहरी युवाओं में राजनीतिक नेतृत्व के प्रति दृष्टिकोण नवीन अधिक प्रगतिशील और मुद्दा-आधारित होता जा रहा है। शहरीकरण, उच्च शिक्षा, मीडिया और डिजिटल उन्नयन की प्राप्त ने युवाओं को अधिक विश्लेषणात्मक और समेकित बना दिया है। शहरी युवा नेतृत्व को केवल जातिगत पहचान से नहीं, बल्कि उसकी नीतियां, क्षमता, सशक्तिकरण और विकासात्मक दृष्टिकोण के आधार पर आंकते हैं। (बेतेले, 1991) के अनुसार, शहरी समाज में जाति का प्रभाव धीरे-धीरे कम हो रहा है और उसकी जगह वर्ग तथा योग्यता आधारित सोच ले रही है। इसके अतिरिक्त (जाफरलॉट, 2003) का मत है कि आधुनिक राजनीतिक दलों में युवाओं की भागीदारी बढ़ने से नेतृत्व के प्रति अपेक्षाएं भी बदल रही हैं, जहां पारंपरिक पहचान की तुलना में प्रदर्शन और उत्तरदायित्व अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं।

हालांकि, यह भी देखा गया है कि शहरी क्षेत्रों में जाति का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि यह नए रूपों में उपस्थित है। कई बार राजनीतिक दल जातिगत समीकरणों को ध्यान में रखकर जातियों का चयन करते हैं, जिससे युवाओं की धारणा पर भी अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है (देसाई, 2004)। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया और राजनीतिक अभियानों के माध्यम से भी जातिगत पहचान को पुनः सक्रिय किया जाता है, जिससे शहरी युवाओं में भी जाति आधारित सोच आंशिक रूप से बनी रहती है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 12, December 2025
Impact Factor: 5.731

ग्रामीण और शहरी युवाओं के बीच यह अंतर मुख्यतः शिक्षा, आर्थिक अवसरों और सामाजिक संपर्कों की विविधता के कारण उत्पन्न होता है। ग्रामीण युवाओं के पास सीमित संसाधन और अवसर होते हैं, जिससे वे पारंपरिक विचारों पर अधिक निर्भर रहते हैं, जबकि शहरी युवाओं को विभिन्न विचारधाराओं और अनुभवों से परिचित होने का अवसर मिलता है। (श्रीनिवास, 1962) के अनुसार, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया सामाजिक विचारों को परिवर्तित करती है, जिससे नई पीढ़ी के विचारों में बदलाव आता है।

इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण युवाओं में राजनीतिक नेतृत्व की धारणा में स्पष्ट अंतर मौजूद है। जहां ग्रामीण युवा पारंपरिक और जाति-आधारित दृष्टिकोण अपनाते हैं, वहीं शहरी युवा अधिक संसाधनों और विकास-आधारित नेतृत्व को प्राथमिकता देते हैं। फिर भी, दोनों ही संदर्भों में जाति का प्रभाव किसी न किसी रूप में बना हुआ है, जो भारतीय राजनीति की अवधारणाओं को छूता है।

शिक्षा, मीडिया और आधुनिकता का जाति-राजनीति संबंध पर प्रभाव

भारतीय समाज में जाति और राजनीति का संबंध ऐतिहासिक रूप से गहरा और जटिल रहा है, अलास्का शिक्षा, मीडिया और आधुनिकता के प्रसार ने इस संबंध को नए आयाम दिए हैं। विशेष रूप से शेखावाटी जैसे क्षेत्रों में, जहाँ पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ मजबूत हो रही हैं, इन त्रिस्तरीय समूहों ने युवाओं के दृष्टिकोण और राजनीतिक व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन पैदा किए हैं। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावशाली माध्यम माना जाता है, क्योंकि यह व्यक्तित्व में आदर्श, लोकतांत्रिक और लोकतंत्र का विकास करता है। शैक्षिक युवा जाति के पूर्वाग्रहों से ऊंचे शिखर नेतृत्व का चयन योग्यता, समुदाय और विकास के आधार पर करने लगे हैं (बेटेइल, 1991)। इसके परिणामस्वरूप, जाति का प्रभाव पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है, लेकिन इसका स्वरूप बदल रहा है।

मीडिया, विशेष रूप से डिजिटल और सोशल मीडिया ने राजनीतिक जागरूकता को व्यापक स्तर पर फैलाया है। आज के युवा विविध संभावनाओं से सूचना प्राप्त करते हैं, जिससे उनकी सोच अधिक स्वतंत्र और आलोचनात्मक होती है। मीडिया के माध्यम से राष्ट्रीय और वैश्विक सांख्यिकी की जानकारी बैठक से युवा केवल स्थानीय जातिगत अनुपात तक सीमित नहीं रहे, बल्कि व्यापक सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में चर्चा की गई (यादव, 1999)। इसके अलावा, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म राजनीतिक चर्चा का एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है, जहां जाति आधारित भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई जाती है और लाभकारी की मांग को बल दिया जाता है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 12, December 2025
Impact Factor: 5.731

आधुनिकता, जिसमें शहरीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण शामिल हैं, ने जाति और राजनीति के संबंध को भी प्रभावित किया है। शहरी क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रीयताओं के लोगों के बीच संपर्क और सहयोग वृद्धि से जातिगत सीमाएँ बहती हैं। आधुनिक कौशल और पेशेवरों के अवसरों के विस्तार ने कौशल और योग्यता के आधार पर लोगों को जाति के आधार पर पहचानने के लिए प्रेरित किया है (श्रीनिवास, 1962)। हालाँकि, यह भी देखा गया है कि आधुनिकता के बावजूद जाति पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है, बल्कि यह नए सिद्धांतों में राजनीतिक लामबंदियों का माध्यम बनी हुई है (जैफ़रलॉट, 2003)।

शिक्षा, मीडिया और आधुनिकता के संयुक्त प्रभाव ने युवाओं में राजनीतिक स्वतंत्रता को विभाजित कर दिया है, जिससे वे अधिक सक्रिय रूप से लोकतांत्रिक छात्रों में भाग लेने लगे हैं। वे अब केवल जातिगत आधार पर मतदान के बजाय विकास, शक्ति और सुशासन जैसी संस्थाओं को संवैधानिकता प्रदान करना चाहते हैं। फिर भी, ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सामाजिक रासायनिक और रासायनिक दबाव के कारण जातियों का प्रभाव अभी भी अधिक देखा गया है (देसाई, 2004)। इसके विपरीत, शहरी युवाओं में इन प्रभावों के कारण जातिगत सोच में थोड़ी अधिक कमी है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा, मीडिया और आधुनिकता ने जाति और राजनीति के पारंपरिक संबंधों को चुनौती दी है और उन्हें बदल दिया है। यद्यपि यह परिवर्तन और संरचना है, फिर भी यह लोकतांत्रिक समाज की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है, जहां नेतृत्व का चयन जाति के बजाय योग्यता और समुदाय के आधार पर होने की संभावना बढ़ रही है।

शेखावाटी क्षेत्र में युवा राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक परिवर्तन

राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र, जिसमें झुंझुनूं, सीकर और चूरू जिले शामिल हैं, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध होने के साथ-साथ राजनीतिक रूप से भी सक्रिय क्षेत्र बना हुआ है। इस क्षेत्र में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी ने पिछले कुछ दशकों में बदलाव देखे हैं, जो सामाजिक दिशा में महत्वपूर्ण संकेत देते हैं। परंपरागत रूप से, शेखावाटी की राजनीति जाति-आधारित नामकरण से प्रभावित रही है, जहां राजनीतिक नेतृत्व और मतदान व्यवहार पर जातिगत पहचान का गहरा प्रभाव था। हालाँकि, वर्तमान समय में युवा वर्ग इस संरचना को चुनौती देते हुए नया राजनीतिक दृष्टिकोण विकसित कर रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी युवाओं की राजनीतिक भागीदारी पर परिवार, जाति और स्थानीय सामाजिक दबाव का प्रभाव देखा जाता है। कई युवा अपने समुदाय के नेताओं का समर्थन करते हैं, जिससे जाति आधारित राजनीतिक रुचियां मजबूत बनी रहती हैं। (यादव, 1999) के अनुसार, ग्रामीण भारत में जातिगत राजनीतिक लामबंदियों का

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 12, December 2025
Impact Factor: 5.731

एक प्रमुख आधार है, और यह प्रवृत्ति शेखावाटी क्षेत्र में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्र में युवाओं की राजनीतिक सोच अधिक स्वतंत्र और समृद्धि-आधारित हो रही है। शिक्षा, रोजगार के अवसर, और सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुंच ने शहरी युवाओं को अधिक वैज्ञानिक और आलोचनात्मक बना दिया है।

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी युवाओं की राजनीतिक भागीदारी के नए आयाम दिए गए हैं। अब युवा केवल मतदान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ऑफ़लाइन अभियान, जन समूह और सामाजिक पर सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। (कैस्टेल्स, 2012) के, नेटवर्क समाज में सूचना का प्रवाह राजनीतिक निजी को प्राप्त होता है और नागरिकों को अधिक सक्रिय बनाता है। शेखावाटी के युवा भी इस प्रवृत्ति से दुष्ट नहीं हैं, और वे डिजिटल माध्यमों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं।

सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभर कर सामने आई है। उच्च शिक्षा प्राप्त युवा जातिगत भेदभाव और पारंपरिक राजनीतिक संप्रदाय के प्रति अधिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। (श्रीनिवास, 1962) ने यह तर्क दिया था कि आधुनिकतावाद सामाजिक समुदायों में परिवर्तन लाता है, और यह सिद्धांत शेखावाटी क्षेत्र में भी लागू होता है। इसके अलावा, महिलाओं की भागीदारी भी एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। अब युवा महिलाएं भी राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, जिससे लैंगिक समानता को बढ़ावा मिल रहा है।

हालाँकि, यह भी सच है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और अवरोधन है। जहां शहरी क्षेत्रों में परिवर्तन तेजी से हो रहा है, वहीं शहरी क्षेत्रों में पारंपरिक सिद्धांत अभी भी मजबूत हैं। (जैफ़रलॉट, 2003) के अनुसार, भारतीय लोकतंत्र में जाति आधारित राजनीति अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन इसके स्वरूप में बदलाव आ रहा है। शेखावाटी क्षेत्र में भी यह बदलाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहां युवा वर्ग धीरे-धीरे-धीरे-धीरे जातिगत सीमाओं से ऊपर की ओर जमीन-आधारित राजनीति की ओर बढ़ रहा है।

यह कहा जा सकता है कि शेखावाटी क्षेत्र में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी सामाजिक का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन रही है। हालाँकि जाति का प्रभाव पूरी तरह से ख़त्म नहीं हुआ है, लेकिन शिक्षा, मीडिया और आधुनिकता के प्रभाव से युवाओं में नई राजनीतिक विकास हो रही है, जो भविष्य में और अधिक समावेशी और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होगी।

साहित्य समीक्षा

जाति और राजनीति के संबंध पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है।

1. (कोठारी, 1970) ने बताया कि भारतीय राजनीति में जाति एक केंद्रीय भूमिका निभाती है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 12, December 2025
Impact Factor: 5.731

2. (जाफरलॉट, 2003) के अनुसार, जाति आधारित राजनीति ने लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा दिया है।
3. (बेतेले, 1991) का तर्क है कि शहरीकरण जाति के प्रभाव को कम करता है।
4. (यादव, 1999) ने ग्रामीण क्षेत्रों में जाति आधारित मतदान व्यवहार को अधिक प्रभावी बताया।
5. (देसाई, 2004) के अनुसार, आधुनिकता के बावजूद जाति का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जाति और राजनीतिक नेतृत्व का संबंध समय के साथ बदल रहा है, लेकिन इसकी प्रासंगिकता अभी भी बनी हुई है।

अनुसंधान के उद्देश्य

1. शेखावाटी के ग्रामीण एवं शहरी युवाओं में जाति के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. राजनीतिक नेतृत्व के चयन में जाति की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. शहरी और ग्रामीण युवाओं के दृष्टिकोण में अंतर को समझना।
4. शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण युवाओं में जाति का प्रभाव शहरी युवाओं की तुलना में अधिक होता है।
2. शहरी युवाओं में शिक्षा के कारण जातिगत सोच कम होती है।
3. राजनीतिक नेतृत्व के चयन में जाति अभी भी एक प्रमुख कारक है।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है।

- **नमूना आकार:** 400 युवा (200 ग्रामीण, 200 शहरी)
- **नमूना चयन:** स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना
- **डेटा संग्रह विधि:**

1. प्राथमिक: प्रश्नावली एवं साक्षात्कार
2. द्वितीयक: पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी रिपोर्ट

- **सांख्यिकीय उपकरण:** माध्य, मानक विचलन, प्रतिशत विश्लेषण
- **अध्ययन क्षेत्र**

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के झुंझुनूं, सीकर और चुरू जिलों में फैला हुआ है। यह क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक विरासत और मजबूत जातिगत संरचना के लिए जाना जाता है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 12, December 2025
Impact Factor: 5.731

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

मापदंड	ग्रामीण युवा	शहरी युवा	SD
जाति का राजनीतिक निर्णय पर प्रभाव	4.4	3.2	0.80
जाति आधारित नेतृत्व का समर्थन	4.2	3.1	0.75
शिक्षा का प्रभाव	3.3	4.5	0.78
मीडिया का प्रभाव	3.0	4.6	0.72
आधुनिक सोच	2.8	4.7	0.70

व्याख्या:

1. ग्रामीण युवाओं में जाति का प्रभाव अत्यधिक (Mean = 4.4) है।
2. शहरी युवाओं में शिक्षा और मीडिया का प्रभाव अधिक है।
3. आधुनिक विचारधारा शहरी युवाओं में अधिक विकसित है।

चर्चा

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में जाति आधारित राजनीतिक नेतृत्व अभी भी मजबूत है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में जातिगत सोच में कमी आई है, लेकिन यह पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।

शिक्षा, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने शहरी युवाओं के दृष्टिकोण को अधिक उदार और प्रगतिशील बनाया है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक मूल्य और सामाजिक दबाव अभी भी प्रभावी हैं।

(जाफरलॉट, 2003) के अनुसार, जाति आधारित राजनीति ने पिछड़े वर्गों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिया है, लेकिन यह सामाजिक विभाजन को भी बनाए रखा है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन दर्शाता है कि शेखावाटी क्षेत्र में जाति और राजनीतिक नेतृत्व के संबंध में शहरी और ग्रामीण युवाओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। जहां ग्रामीण क्षेत्रों में जाति का प्रभाव अभी भी गहरा है, वहीं शहरी युवाओं में यह प्रभाव धीरे-धीरे कम हो रहा है।

Copyright to IJETIR
www.iciset.in

हालांकि, जाति पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है, बल्कि यह नए रूपों में राजनीति को प्रभावित कर रही है। इसलिए, भविष्य में सामाजिक समानता और लोकतांत्रिक विकास के लिए शिक्षा और जागरूकता महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

संदर्भ सूची

1. अली, एम., और सिंह, एस. एस. (2024)। उत्तर प्रदेश में समकालीन पसमांदा नेतृत्व और हिंदुत्व की राजनीति। भारतीय राजनीति में अध्ययन, 12(1), 33-47। https://doi.org/10.1177/23210230241235355
2. कुमार, एस., और हीथ, ओ. (2012)। भारत में जाति, सामाजिक क्षेत्र और मतदान व्यवहार। अध्ययन अध्ययन, 31(3), 1-10. https://doi.org/10.1016/j.electstud.2012.02.003
3. कुमार, डी. (2018)। भारत में जाति और राजनीति: एक अध्ययन। रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 3(12), 1-5। https://doi.org/10.5281/zenodo.2108702
4. कुमार, पी. (2025)। उत्तर भारत में जाति की राजनीति और असमानता। भारत समीक्षा, 24(4), 431-459। https://doi.org/10.1080/14736489.2025.2555134
5. गुप्ता, डी. (2005)। जाति और राजनीति: व्यवस्था से ऊपर की पहचान। वार्षिक समीक्षा नृविज्ञान, 34, 409-427। https://doi.org/10.1146/annurev.anthro.34.081804.120357
6. चन्द्रा, के. (2004)। जातीय दल सफल क्यों होते हैं। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। https://doi.org/10.1017/CBO9780511510106
7. जाफ़रेलॉट, सी. (2003)। भारत की मूक क्रांति: उत्तरी भारत में मैक्रोज़ का उदय। कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस। https://doi.org/10.7312/jaff12376
8. जेफ़री, सी., जेफ़री, पी., और जेफ़री, आर. (2008)। बिना नाश्ते के डिग्रियाँ? उत्तरी भारत में शिक्षा, पौरुष और बेरोज़गारी। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। https://doi.org/10.1515/9780804769846
9. झा, ए. (2025)। यह है जाति की ताकतें: उत्तरी भारत में युवा राजनेता और जातिगत वर्चस्व। दक्षिण एशिया: जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 48(5), 1206-1227। https://doi.org/10.1080/00856401.2025.2524964
10. पलशिकर, एस. (2024)। जाति और राजनीति: लोकतंत्र की सीमाएं। इंडियन पॉलिटिक्स का ऑक्सफोर्ड हैंडबुक। https://doi.org/10.1093/oxfordhb/9780198894261.013.19

11. पाई, एस. (2011). भारत में विकास मूल राज्य और दलित राजनीति। जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज़, 70(2), 1-12। https://doi.org/10.1017/S0021911811000165

12. बनर्जी, एम. (2014)। ग्रामीण भारत में जाति और वर्ग की राजनीति। क्लासिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 49(12), 45-52। https://doi.org/10.2307/24479234

13. बबली, और मेहर, एम. (2025)। बहुजन राजनीति और कांशीराम के बाद का सामाजिक-राजनीतिक संगठन। सिनर्जी: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिप्लिनरी स्टडीज़। https://doi.org/10.63960/sijmds-2025-2250

14. मिशेलुटी, एल. (2004)। हम (यादव) लोकतांत्रिक जातियाँ हैं: उत्तरी भारत की एक जनजाति और आधुनिक राजनीति। भारतीय समाजशास्त्र में योगदान, 38(1-2), 1-30। https://doi.org/10.1177/006996670403800103

15. यादव, एस. (2021)। भारतीय राजनीतिक शास्त्र में युवा नेतृत्व: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण। विद्याभारती इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल, विशेष अंक, 1-6।

16. लेवेस्क, जे., और नियाज़ी, एस. (2023)। भारत में जाति की राजनीति, अल्पसंख्यक प्रतिनिधि और सामाजिक व्यक्तित्व। समकालीन दक्षिण एशिया, 31(3), 413-425। https://doi.org/10.1080/09584935.2023.2240258

17. वर्मा, आर. (2018)। ग्रामीण भारत में युवा भागीदारी और राजनीतिक लामबंदी। जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज़, 25(2), 45-60। https://doi.org/10.1177/0970016718771234

18. शर्मा, ए., और पाल, आर. (2020)। राजस्थान में राजनीतिक नेतृत्व और जातिगत अलगाव। जर्नल ऑफ़ सोशल एंड डेमोक्रेटिक, 22(2), 1-15। https://doi.org/10.1007/s40847-020-00115-2

19. सिंह, के. (2016)। युवाओं में राजनीतिक भागीदारी में ग्रामीण-शहरी अंतर। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, 57(3), 1-12। https://doi.org/10.5958/2249-7137.2016.00045.3

20. हीथ, ओ., और टिलिन, एल. (2015)। भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स प्रदर्शन और वोट खरीदार। स्टडीज़ इन इंडियन पॉलिटिक्स, 3(2), 1-15। https://doi.org/10.1177/2321023015602040